



सरकारी गज़ट, उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित

इलाहाबाद, शनिवार, 20 जनवरी, 2018 ई० (पौष 30, 1939 शक संवत्)

भाग 4

निदेशक, शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

कार्यालय, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

विज्ञप्ति

19 दिसम्बर, 2017 ई०

सं० परिषद्-9/1045-सर्वसाधारण की जानकारी हेतु विज्ञापित एवं प्रसारित है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र० द्वारा दिनांक 01 अप्रैल, 2018 से प्रारम्भ हो रहे शैक्षिक सत्र-2018-19 (परीक्षा वर्ष-2019) के कक्षा 9, 10, 11 एवं 12 से सम्बन्धित विषयों के पाठ्यक्रमों को निम्नवत् निर्धारित किया जाता है:-

कक्षा-9

हिन्दी

गद्य-

1-रवीन्द्र नाथ टैगोर की कहानी- "तोता" को सम्मिलित किया गया:-

तोता

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था। गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा-कानून किसे कहते हैं।

राजा बोले, "ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा-मण्डी के फल-बाजार में टोटा पड़ जाता है।" मंत्री को बुलाकर कहा, "इस तोते को शिक्षा दो!"

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पण्डितों की बैठक हुई। विषय था, "उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?" बड़ा गहरा विचार हुआ। सिद्धान्त ठहरा : तोता अपना घोंसला साधारण खर-पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढिया-सा पिंजरा बना दिया जाय। राज-पण्डितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने-अपने घर गये।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश-विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, "शिक्षा की तो इति हो गयी।" कोई कहता, "शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।"

सुनार को थैलियाँ भर-भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया। पण्डित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, "यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।"

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गये। जिसने, भी देखा, उसने यही कहा कि, "शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।"

नकलनवीसों को लहू बैलों पर लाद-लादकर इनाम दिये गए। वे अपने-अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम-निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख-रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू-पोंछ और पालिश की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि "उन्नति हो रही है।"

इन कामों पर अनेक-अनेक लोग लगाये गये और उनके कामों की देख-रेख करने पर और भी अनेक-अनेक लोग लगे। सब महीने-महीने मोटे-मोटे वेतन ले-लेकर बड़े-बड़े सन्दूक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे-ममेरे-मौसरे भाई-बंद बड़े प्रसन्न हुए और बड़े-बड़े कोठों-बालाखानों में मोटे-मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गये।

(4)

संसार में और-और अभाव तो अनेक हैं, पर निन्दकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, "पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज-खबर लेने वाला कोई नहीं है।"

बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच-सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइये, नकलनवीसों को बुलाइये, मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइये। निन्दकों को हलवे-मौड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली-भाँति और साफ-साफ तौर से समझ लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाये गये।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे धूमधड़ाके से और कैसी बगटुट तेजी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगाँ, मित्रों और मन्त्रियों के साथ आप ही शिक्षा-शाला में आ धमके।

उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरिया, झाल, करताल, मृदंग, जगझम्प आदि-आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़-फाड़कर और बूटियां फड़का-फड़काकर मन्त्र-पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे, मौसरे भाई जय-जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा!"

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कोई कम नहीं!" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झुरमुट में छिपा बैठा निन्दक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है?" राजा चौंके। बोले, "अरे हाँ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था! तोते को तो देखा ही नहीं!" लौटकर पण्डित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढंग से हो।" पढ़ाने का ढंग उन्हें दिखाया गया। देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है! राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल-चूक नहीं है। पिंजरे में दाना-पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड़-फाड़कर कलम की नोक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बन्द हो ही गया था, चीखने-चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजायश नहीं छोड़ी गयी थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बन्द हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान-उमेदू सरदार को ताकीद कर दी कि "निन्दक के कान अच्छी तरह उमेठ देना!"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा की प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी-स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकुर-टुकुर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी-किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धम्माधम्म लोहा-पिटाई हुई कि कुछ न पूछिये! लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिये गये।

राजा के सम्बन्धियों ने हॉडी-जैसे मुँह लटका कर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिफ बेवकूफ ही नहीं, नमक-हराम भी है।"

और तब, पण्डितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले-लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गयी और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निन्दक ने अफवाह फैलायी कि "तोता मर गया!"

राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है!"

राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता-फुदकता है?"

भानजा बोला, अजी, राम कहिये!"

(8)

"अब भी उड़ता है?"

"ना; कतई नहीं!"

"अब भी गाता है?"

"नहीं तो!"

"दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?"

"ना!"

राजा ने कहा, "एक बार तोते को लाना तो सही, देखूंगा जरा!"

तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आये, प्यादे आये, घुड़सवार आये।

राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।

बाहर नव-बसन्त की दक्षिणी बयार में नव-पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया। (गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगौर)

2-"सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम" नामक पाठ को सम्मिलित किया गया:-

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

'यातायात' दो शब्द से मिलकर बना है 'यात+आयात' जिसका अर्थ है आना-जाना। प्राचीनकाल से ही मानव-सभ्यता की समस्त जीवन-शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में यातायात से सम्बन्धित महत्वपूर्ण नियम बनाये गये हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा-वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक है क्योंकि विश्व में सड़क-यातायात में मौतों और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गयी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क-हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में एवं सुचारु रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,40,000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत ही वाहन भारत में है, जबकि विश्व की कुल सड़क-दुर्घटना में से 10: हादसे भारत में होते हैं। “विडम्बना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात करने की कोशिश न करे”।

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिसका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं— (1) सुरक्षा से सम्बन्धित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ; (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें-बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा-क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब-वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शार्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर-वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखना चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें “रुकें, देखें, सुनें, सोचें” का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ-साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होती है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) सम्बन्धित महत्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना भी आवश्यक होता है क्योंकि भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग 4.9 लाख सड़क दुर्घटनाएँ हुई हैं, जिसमें 142485 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूले होती हैं जिससे दुर्घटना हो जाती है, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट-बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क-दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपरोक्त निर्देशित समस्त बिन्दुओं पर ध्यान-केन्द्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी हैं। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती है, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परन्तु नशे की हालत में गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी-कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क-संकेन्द्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती हैं, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियो एवं रेडियों का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचना पट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग-परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजे देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किसकिस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रुकना है; पीली बत्ती का संकेत